शुष्क क्षेत्र में टिकाऊः जैविक खेती

जैविक कृषिः स्थानीय रूप से उपलब्ध जैविक व प्राकृतिक संसाधनों जैसे पशु अपशिष्ट, फसल अवशेष, वर्ष जल इत्यादि सदुपयोग व रसायनिक उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि का प्रयोग न करके, प्रकृति मित्र तकनीकों से फसल पोषण व रक्षण प्रबंधन करने को जैविक कृषि कहते हैं।

शुष्क क्षेत्र के लिये अनुकूल-जैविक कृषि

- रसायनों का प्रयोग कम होने से अवशेष न्यूनतम से जैविक रूपान्तरण में सुविधा।
- जैविक आदान जैसे नीम, जैविक खाद की पर्याप्त उपलब्धता।
- निर्यात मांग वाली कुछ विशेष उच्च मूल्य फसलें जिनका उत्पादन शुष्क क्षेत्र में ही होता है।

जैविक कृषि व्यवस्था बनाने में समय, लागत व उत्पादन

- जैविक व्यवस्था को बनाने में 3 से 4 वर्ष का समय लग सकता है।
- बाहरी आदानों पर निर्भरता बहुत कम है।
- केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान के प्रमाणिक जैविक फार्म पर किए गए प्रयोगों में पाया गया कि मूंग की 930 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर, तिल की 886 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर व ईसबगोल की 808 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो सकती है।
- जैविक प्रमाण पत्र मिलने पर उत्पाद की बाजार में स्वीकार्यता बढ़ जाती है।

योगदान: अरूण कुमार शर्मा
भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर 342 003 (भारत)
www.cazri.res.in

काजरी फैक्टशीटः 2021

CAZRI®
Enhancing resilience of arid lands